(1)

10-5-21 — 200m0033 — 01:36:36

(डगड़ा भाणीज की बात) दपेभूं सगावड़ा
हाकम रवि

डगड़ा भाणीज बाला राठौड़ के राजपूत अभयसिंह के लड़के थे। सरवर कैवाट के भाणीज थे सरवर केवांट ~~को [illegible]~~ उज्जैन नगरी के राजा थे। उगमसिंह भाणीज व आपके मामे का लड़का भाई भंवरसिंह दोनो गेंद खेलते थे। उगमसिंह भाणीज का माता-पिता दोनो का देहान्त हो चुका था। उगमसिंह भाणेज अपने मामा सरवर कैवाट के यहाँ रहते थे। बाद में दोनो भाई मोमों-भुवाओं के आपस में गेंद पै लड़ गये लड़ाई-झगड़ा होने पर मामी ने उगमसिंह को अपने घर जाने कहा। तब डगड़ा भाणीज (उगमसिंह) ने मामी एक हाथ ताड़ी नहीं बजेगी, तब उगमसिंह ने कहा कि आदमी एक हाथ से ताली बजाता है। दोनो हाथों से औरत बजाती है जो रोटीयों बनाती है। मर्द एक हाथ से ताली बजाता है। इतना कहकर उगमसिंह अपने घर रवाना हो गये.

(उगमसिंह भाणेज की बात)

कुछ समय के बाद ~~ब~~ एक बारहजी (चारण) जो एक सरवर केंवार ऊपर कवीता बनाकर और ~~कोटलासरवाल~~ उजैन-नगरी आया और उस उगमसिंह के मामे को सुनाने लगा कवीता सुनकर बहुत खुश होवे, अब उस बारट जी को बोला कि आप अपनी सीख दान मांगो तब चारण ने कहा कि आप अपनी पाग दे दो, तब सरवरकेवार ने कहा कि मेरी पाग इनवी है किसी के आगे निमती नहीं है आप हर जगह जाकर सुभराज (कवीता) कहते हो इस कारण मेरी पाग निमेगी इसलिए मेरी पाग नहीं दुंगा मगर वचन सिद्धी होने पर उसको पाग देनी पड़ी। चन्द भाट (चारण) जो नागो का भाट था नाग (सर्प) के कुल वंश की पिढ़ी कहता था। चन्द भाट जो सांपो को खुश करता और उनसे दान लेता था। एक सांप जो बड़ा नेता था उसने कम दान देने पर नाराज होगये

(उगमसिंह भाणेज की बात)

तब वह नागो का भाट नाराज होकर सरवर-केवाट के पास गये और इनकी पाग लेकर आये, कुछ दिनो के बाद नागों का चन्द भाट घूमता-घूमता अन्नत-राव-सोंखले के गाँव कोयला-सर पाटन गये, वहां पाटन जाकर उस भाट ने कवीता अंन्नत-राव-सोंखले को सुनाई और उसने बांये (दावड़ा) हाथ से उसको सलामी दी तब बाकी के लोंगो ने उस राजा को भड़काया कि आपको बांये हाथ से सलामी दी तब राजा के पूछने पर चन्द भाट ने कहा कि यह इनकी गाड़ी है जो सरवर केवाट राजा उज्जैन का है उस राजा ने मेरे को दान मे अपनी पाग दि है जो इनकी है किसी के आगे किमती नहीं तब अन्तराव-सोंखले ने उस राजा को अपने आगे निमाने की कौशीश कर अपने गाँवे के चार-पाँच आदमी भेजे और उसको वहाँ

(उगमसिंह भाणेज की बात)

लाने की कोशीश करी, अब सौंखले राजा के आदमी सरवर-कैवाट को शराब के नशें में पागल कर अपने रथ पर संवार कर वहाँ ले गये। सुबह दिन उगने पर सरवर कैवाट को सौंखले की कचेड़ी में बुलाकर कहा कि ये खिड़की हैं इसके अन्दर कर आना है। तब सरवर-कैवाट ने खिड़की के सबसे पहले पाँव निकालकर फिर अपना माथा (शीश) निकाला। तब अन्नतराव-सौंखले ने पानी की पणीहारी जो सरवर- तालाब पर जाती हैं उसके मार्ग पर 150 मन का पिंजरा लाकर दिया और उस पिंजरे में उस कैवाट को बन्द कर दिया व अब सौंखला राजा बोले कि जो पणीहारी पानी को जाएगी वो इस पिंजरे पर चमका देकर उसके ऊपर एक भाला हैं जो उस राजा के सीर पर लगाकर जाएगी उसको एक सोने का

(उगमसिंह भाणेज की बात)

टका (रुपया) देंगे। सारी औरतें वहां पर पिंजरे के ऊपर होकर निकलती एक उज्जैन नगरी की कुम्भारी (प्रजापत) थी सरवर-कँवार राजा के गांव की थी। उसने कहा कि इस राजा का भाणेज उगमसिंह है बहुत ही खुँखार है उसको अगर ध्यान पड़ा तो देखना क्या होता है। वो इमीया कुम्भारी उस पिंजरे के दूर कर निकलती। बाकी की औरते उस पिंजरे पर होकर निकलती। कुछ दिनो बाद उस भाणेज पता पड़ने पर वह उज्जैन नगरी आया और उस चन्द भाट को मामी के समीचारों से वहाँ पर बुलाया और उस भाट को पूछा। भाट ने कहा की आपके मामे को अनन्त-राव-सांबले ने पिंजरे में बन्द कर रखा है। तब उगमसिंह ने अपनी फोज तैयार कर रवाना हुआ बीच में उगमसिंह का ससुराल था, बाकी के फोज वालो ने कहा कि आप अपने बीच में ससुराल है

(उगमसिंह भाणेज की गाथा)

वहां होकर जायेंगे। तभी उगमसिंह भाणेज अपने ससुराल गये। और भाणेज की पत्नि ने अपने पति को समझाया कि इतने आदमी क्यों ले जा रहे हो, उसने कहा कि कोयलासर-पाटन में घास (चारा) की कमी है आप 10-12 गाड़ा झोली चारा कया कर वहां पर ले जावो। तभी खूंखार आदमीयों को जांच कर बाकी के लोंगो से घास कटवाकर झोली-भरकर उन बाकी के लोंगो को अपने गांव भेज दिया. खूंखार आदमी थे उनको उस झोलीयों में निचे-सुलाकर उपर घास भर दिया। और पाटन की तरफ रवाना हो गए - जाते-जाते पाटन पहुंच गए. अन्नतराव-सांखले के गांव में चार-दिवारी के पास से आवाज लगाते कि कल्ले कि घास के ऊर-गाड़े हैं चारा अगर किसी को चाहीए तो ले लो। तभी सांखले ने आवाज मारी

(7)

हमारे गाँव में चारा (घास) लेना है आप इस घास की किमत बोलो। तभी उगमसिंह ने कहा कि किमत एक साथ होगी। तभी पाटन के राजा ने कहा कि इस घास में अगर चोखा-चट्टी तो नहीं है, तभी भाणेज उगमसिंह ने कहा कि इस घास में भाला लगाकर चैक करलो। तभी राजा ने घास लिया और चैक किया तब उगमसिंह ने कहा कि इसकी किमत एक-दो-तीन ता लीयो मैं लगेगी। तो अब सोंखला राजा तैयार हो गया और उगमसिंह भाणेज ने एक दो तीन कहा और उस के अन्दर से नौ जवान निकले ढाल-तलवार बन्दूक लेकर उस गाँव के वासीयों पर टुट पड़े।

तभी उस प्रजापत की औरत ने कहा कि मैं हमेशा कहती थी कि इस पिंजरे से दूर कर निकलो तभी आप मानती नहीं आज वो उगमसिंह भाणेज आया है जो धणी को मारसें।

(उगमसिंह भाणेज की गाथा)

(अमीयों कुम्भारी ने कहा)

जोवो जोवण आलीयो, गोखे ज काढो हाथ।
अमीयों कहती उगड़ो, ओ आण पहुँचो आज।
उगमसिंह ने अनेको आदमी मारे, फौज पूरी गांव को
मारने लगी व उस राजा अन्नत-राव सौंखले
को मारने लगी तब राजा की लड़की ने कहा

(राजा की लड़की ने कहा)

सात सौ मारा सोंखला, पन्द्रे सौ प्रधान।
एक मत मार राजा अन्नत नो, अन्नेराव री आण।
राजा की लड़की ने कहा कि हे उगमसिंह सभी को मार
दिया एक मेरे पिताजी राजा को मत मारना
आपको आपके पिताजी (जिसा) की सौगन्ध है
तभी उगमसिंह ने उस फौज को मना कर दिया
और शान्त के बाद राजा की लड़की ने
उगमसिंह को कहा कि एक शर्त है कि

(उगमसिंह भाणेज की गाथा)

मेरे पिताजी को छोड़ दो, मेरी शादी आपके साथ करेंगे। तभी सांखला राजा को छोड़ दिया परन्तु एक बात है आपके पिताजी को मेरे मामा के पास तक आपके पिताजी के नाक में रसी डालकर और बैल के सामने बैल गाड़ी में जोतकर ले जाएंगे फिर बाद में छोड़ देंगे। तब राजा की लड़की ने कहा कि ठीक है। फिर अन्नतराव सांखले को बैल के सामने लेकर उस केवार के पास काला मुँह कर गए। और उगमसिंह ने कहा कि सांखला साहब आप अपने हाथ से पिंजरा खोलो और मेरे मामा से माफी मांगो। सांखला ने माफी मांगी फिर मामा ने उगमसिंह को कहकर उसकी लड़की से शादी करवादिया। अब मामा भानजा उगमसिंह की औरत तीनो और फोज सारी एक साथ होकर भाणेज के पहले वाले

(उगमसिंह भाभेज की गाथा)

ससुराल गए।

पहली वाली राणी ने अच्छी स्वागत की।
वहां से दूसरे दिन अपने गांव उज्जैन नगरी गए,
वहां जाकर उगमसिंह ने अपनी मामी से कहा
कि मामी आदमी होता वो एक हाथ से ताली
बजाता है दो हाथ से औरते जो खाना पकाने
के लिए रोटी बनाती हैं वो औरत दो हाथ से
ताली बजाती है।